कवि श्री बख्तावरसिंह

वर स्वर्ग प्राणत सों विहाय सुमात वामा-सुत भये|
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर चरन जिनके सुर नये||
नव-हाथ-उन्नत तन विराजे उरग-लच्छन अति लसें|
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो! करम मेरे सब नसें||

क्षीर-सोम के समान अम्बु-सार लाय के|
हेमपात्र धारि के सु आपको चढ़ाय के||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लेय के|
आप चर्ण चर्चुं मोह-ताप को हनीजिये||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

फेन चंद्र के समान अक्षतान् लाय के|
चर्ण के समीप सार पुंज को रचाय के||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाय के|
धार चर्ण के समीप काम को नशाय के||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

घेवरादि बावरादि मिष्ट सर्पि में सने|
आप चरण अर्चतें क्षुधादि रोग को हने||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

लाय रत्नदीप को सनेह पूर के भरूँ|
वातिका कपूर बारि मोह-ध्वांत को हरूँ||
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा|
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा||

धूप गंध लेय के सुअग्नि-संग जारयै।
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारयै।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

खारिकादि चिरभटादि रत्न-थाल में भरूँ।
हर्ष धारि के जजूँ सुमोक्ष सौख्य को वरूँ।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

नीर गंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजियै।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजियै।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

जयमाला

पारसनाथ जिनेंद्र तने वच, पौन भखी जरते सुन पाये।
कर्यो सरधान लह्यो पद आन, भये पद्मावति-शेष कहाये।।
नाम-प्रताप टरें संताप, सुभव्यन को शिवशर्म दिखाये।
हो अश्वसेन के नंद भले! गुण गावत हैं तुमरे हर्षाये।।

केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव-हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदूँ पारसनाथ ।।१।।

रची नगरी छह मास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार।
सु कोट-तनी रचना छवि देत, कंगूरन पे लहकें बहु केत ।।२।।

बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भाँति धनेश तैयार।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करे सुख वाम सु दे पटनार ।।३।।

तज्यो तुम प्राणत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन।
तबै सुर-इंद्र नियोगनि आय, गिरीन्द्र करी विधि न्हौन सु जाय ।।४।।

पिता-घर सौंपि गये निजधाम, कुबेर करे वसु जाम जु काम।
बढ़े जिन दोज-मयंक समान, रमे बहु बालक निर्जर आन ।।५।।

भए जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महा सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो मम आस ।।६।।

करी तब नाहिं, रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जु मंद।
चढ़े गजराज कुमारन संग, सु देखत गंग-तनी सुतरंग ।।७।।

लख्यो इक रंक करे तप घोर, चहूँ दिसि अग्नि बलै अति जोर।
कहे जिननाथ अरे सुन भ्रात, करे बहु जीवन की मत घात ।।८।।

भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव-ब्रह्म ऋषि सुर आय ।।९।।

तबहिं सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंध मनोग।
कियो वनमाँहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद ।।१०।।

गहे तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महा सुखकार, भई पनवृष्टि तहाँ तिहिं बार ।।११।।

गये तब कानन माँहिं दयाल, धर्यो तुम योग सबहिं अघटाल।
तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचर को सुर आन ।।१२।।

करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब बैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर ।।१३।।

रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सु रुंडन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़े जल मूसल धार अथाय ।।१४।।

तबै पद्मावति-कंत धनिंद, नये जुग आय जहाँ जिनचंद।
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल ।।१५।।

दियो उपदेश महाहितकार, सुभव्यनि बोधि सम्मेद पधार।
'सुवर्णभद्र' जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिवनारि लही वसु-रिद्ध ।।१६।।

जजूँ तुव चरन दोउ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहे 'बखतावर' 'रत्न' बनाय, जिनेश हमें भव-पार लगाय ।।१७।।

जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी, पर उपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ।।

जो पूजे मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही|
ताके दु:ख सब जाय भीति व्यापे नहि कित ही||
सुख-संपति अधिकाय पुत्र-मित्रादिक सारे|
अनुक्रमसों शिव लहे, 'रत्न' इमि कहें पुकारे||